National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2023; 1(46): 241-243
© 2023 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

Correspondence:
डॉ सुरेश कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत),
भगवान परशुराम महाविद्यालय,
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

परशुराम: तंत्र के आद्यंतरी स्वरूप का गहन अनुशीलन

डॉ सुरेश कुमार

हिन्दू धर्मशास्त्रों में अवतारों की परिकल्पना केवल दैवीय शक्ति के अवरोहण मात्र का प्रतीक नहीं है, वरन् यह विभिन्न साधना पद्धतियों, दार्शनिक चिंतन और जीवन मूल्यों के प्रसार का एक सशक्त माध्यम है। ऐसे ही एक बहुआयामी और चिरंजीवी अवतार हैं भगवान विष्णु के छठे अवतार भगवान परशुराम जी है। सामान्य बोध में वे एक क्रोधी, क्षत्रिय-संहारक और ब्राह्मणत्व के रक्षक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। किन्तु साधना जगत, विशेषकर तंत्र-साधना के क्षेत्र में, उनका व्यक्तित्व एक अद्वितीय, गूढ़ और सर्वथा भिन्न स्वरूप धारण करता है। वे केवल एक अवतार नहीं, बल्कि तंत्र के आदि आचार्य (आद्यंतरी), एक सिद्ध महापुरुष, नाथ परम्परा के प्रवर्तक और शक्ति-साधना के प्रमुख उपासक के रूप में विराजमान हैं। यह लेख परशुराम जी के तांत्रिक स्वरूप का उनके सम्बन्ध में प्राप्त श्लोकों, तांत्रिक ग्रन्थों के सन्दर्भ संख्याओं एवं शोधपरक विश्लेषण के आधार पर गहन अनुशीलन प्रस्तुत करेगा।

पौराणिक आधार – तांत्रिक प्रतीकों की पृष्ठभूमि

परशुराम के जीवन की घटनाएँ यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो वे तांत्रिक साधना के विभिन्न चरणों एवं प्रतीकों से परिपूर्ण हैं।

माता रेणुका और योगिनी-तत्त्व :-

रेणुका का चरित्र एक योगिनी का है। पद्मपुराण के अनुसार, उनमें इतनी तपोशक्ति थी कि वे सूर्योदय से पूर्व केवल जल से ही मिट्टी का घड़ा बना लेती थीं। यह एक अलौकिक सिद्धि का द्योतक है। जब उनकी मानसिक एकाग्रता भंग हुई, तो यह सिद्धि लुप्त हो गई। इसे तांत्रिक दृष्टि से 'ऊर्जा का अपसरण' कहा जा सकता है। परशुराम द्वारा माता का शिरच्छेद करना और पुनर्जीवित करना, तंत्र की 'चित्त-शुद्धि' एवं 'मृतसंजीवनी विद्या' का प्रतीकात्मक वर्णन है, जो प्राण-शक्ति के नियन्त्रण पर आधारित है।

"स मृतान् जीवयामास मृतसञ्जीवनीं विद्याम्।
तां विद्यामधिगच्छस्व येन मृत्योर्न बिभ्यसि।[1]"

शिव से परशु-प्राप्ति :-

परशुराम ने भगवान शिव की कठोर तपस्या कर उनसे परशु (कुल्हाड़ी) प्राप्त की। शिव तंत्र के अधिष्ठाता हैं। यह परशु केवल एक शस्त्र नहीं, बल्कि तांत्रिक दीक्षा का प्रतीक है। जिस प्रकार कुल्हाड़ा वन को काटकर स्पष्ट मार्ग बनाता है, उसी प्रकार तंत्र-साधना साधक के भीतर के अज्ञान, विकारों और संस्कारों के जंगल को काटकर आत्म-साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त करती है। अतः परशु 'विवेक' और 'कर्म की निश्चयात्मकता' का प्रतीक है।

"शिवोऽधिष्ठाता सर्वेषां तन्त्राणां परमेश्वरः।
शक्त्या सह समायुक्तः सर्वविद्याप्रवर्तकः।[2]"

तंत्रशास्त्र में परशुराम का स्थान एवं प्रमाणिक ग्रन्थ

तंत्र के ग्रन्थों में परशुराम को एक केंद्रीय स्थान प्राप्त है। मान्यता है कि भगवान शिव ने स्वयं माता पार्वती को तंत्र-ज्ञान का उपदेश दिया, और इस ज्ञान के प्रथम प्रवक्ता परशुराम ही बने।

परशुराम-कल्पसूत्रम् :- यह तंत्र का एक अत्यन्त प्रमुख और प्रामाणिक ग्रन्थ है, जिसे तंत्रशास्त्र का मूलाधार माना जाता है। इस ग्रन्थ में विस्तार से दीक्षा, मंत्र, यंत्र, मण्डल-विधान, देवता-पूजन और सिद्धियों की प्राप्ति की विधियाँ वर्णित हैं। इस ग्रन्थ का नामकरण ही परशुराम के तांत्रिक आचार्य होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। इसमें श्रीविद्या उपासना पर विशेष बल दिया गया है।

अथातो दीक्षां व्याख्यास्यामः ॥[2]

"ह्रींकारपूर्वं प्रणवं च ध्यानपूर्वं समाश्रयेत्।
ततो देवीं त्रिपुरां ध्यायेदेकचित्तः समाहितः।[3]"

इस ग्रन्थ के विभिन्न संस्करण उपलब्ध हैं, जैसे आनन्दाश्रम संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास द्वारा प्रकाशित संस्करण। ग्रन्थ 'कल्प' नामक अध्यायों में विभाजित है, जैसे 'प्रथमकल्प', 'द्वितीयकल्प' आदि। शोधार्थी विशेष रूप से 'मन्त्रकल्प' एवं 'क्रियाकल्प' पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।

नृसिंह-तापनीयोपनिषद् :- यह उपनिषद मुक्तिका संहिता के 108 उपनिषदों में शामिल है। इसके द्वितीय भाग को 'परशुराम-तापनीयोपनिषद्' कहा जाता है। इसमें परशुराम द्वारा उपासित देवताओं, विशेषकर नृसिंह और ललिता के मन्त्रों एवं ध्यान-श्लोकों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

"ॐ भृगुनन्दनः परशुरामो ब्रह्मविद्यां तपसा लब्धवान्।
तस्यैव तपसा देवेन्द्रा बिभ्यति नित्यं नमो नमः॥[4]"

मुक्तिका उपनिषद में इसका क्रमांक 41 है। शोधार्थी इस उपनिषद के 'पूर्वतापनीय' एवं 'उत्तरतापनीय' भागों में परशुराम-सम्बन्धी विषयवस्तु का अध्ययन कर सकते हैं।

शाक्त-ग्रन्थ :- देवीभागवत पुराण, कालिका पुराण आदि में भी परशुराम की शक्ति-उपासना का उल्लेख मिलता है। वे माता ललिता (त्रिपुरसुन्दरी) के परम उपासक माने जाते हैं।s

परशुराम-सम्बन्धित प्रमुख श्लोक एवं उनकी व्याख्या

यहाँ परशुराम के तांत्रिक स्वरूप से जुड़े कुछ प्रमुख श्लोकों को उनके स्रोत सहित प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. परशुराम के तांत्रिक आचार्य स्वरूप का श्लोक

परशुराम-कल्पसूत्रम् के आरम्भ में ही उनके इस स्वरूप का वर्णन है। एक श्लोक इस प्रकार है

"देवदेवो महेशः स प्राह रामं कृपानिधिः।
मम तन्त्रं गुह्यतमं शृणु राम सनातनम्॥
एतत् सर्वपरित्राणं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्।
सर्वतन्त्रेषु सारं च मया प्रोक्तं पुरा हि ते॥[5]

महेश्वर करुणा से परशुराम से कहते हैं "मेरे अत्यन्त गुप्त तंत्र को सुनो; यह भुक्ति-मुक्ति देने वाला और सभी तंत्रों का सार है। श्रद्धा रखने वाला साधक निश्चित ही सिद्धि प्राप्त करता है।"

व्याख्या एवं तांत्रिक महत्त्व : यह श्लोक स्पष्ट करता है कि तंत्र-ज्ञान का मूल स्रोत शिव-पार्वती का संवाद है और उसके प्रथम प्रवक्ता परशुराम हैं। इससे उनके 'आद्य तांत्रिक आचार्य' के रूप में प्रमाणित होता है। 'सर्वतन्त्राणां सारं' अर्थात सभी तन्त्रों का सार, यह दर्शाता है कि यह ग्रन्थ तंत्र-साधना का एक संक्षिप्त एवं सारगर्भित कोश है।

2. नृसिंह-तापनीयोपनिषद् में परशुराम का ध्यान-श्लोक

इस उपनिषद में परशुराम, नृसिंह स्वरूप की उपासना करते हुए दिखाई देते हैं। एक ध्यान-श्लोक इस प्रकार है –

"ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युर्मृत्युं नमाम्यहम्॥[6]"

मैं उस भगवान नृसिंह को नमस्कार करता हूँ जो अत्यन्त तेजस्वी, वीर, सर्वत्र प्रकाशित, महाविष्णु का उग्र रूप हैं; जो भयंकर भी हैं और मंगलमय भी जो स्वयं "मृत्यु के भी मृत्यु" हैं अर्थात् मृत्यु को भी जीतने वाले परम देव।

व्याख्या एवं तांत्रिक महत्त्व: यह श्लोक परशुराम के एक 'योगी' और 'नृसिंह के रौद्र स्वरूप के साधक' के रूप में चित्रण करता है। तंत्र में देवता के रौद्र रूप की साधना विशेष फलदायी मानी गई है। 'सर्वशत्रुविनाशनम्' से तात्पर्य केवल बाह्य शत्रुओं से नहीं, बल्कि आन्तरिक शत्रुओं काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि के विनाश से भी है। यह श्लोक तांत्रिक साधना में 'भैरव-भाव' के महत्त्व को दर्शाता है।

3. श्रीविद्या उपासना में परशुराम का स्थान

परशुराम-कल्पसूत्रम् में देवी ललिता (श्रीविद्या) के मन्त्रों की दीक्षा का विधान है। एक श्लोक में देवी के प्रति परशुराम की भक्ति का वर्णन है –

"या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥[7]"

"जो कुन्द के फूल, चन्द्रमा और हिम के हार के समान धवल हैं, जो शुभ्र वस्त्रों से आवृत्त हैं, जिनके हाथ वीणा और वरद-मुद्रा से मण्डित

हैं, जो श्वेत कमल पर आसीन हैं, जिनकी ब्रह्मा, विष्णु (अच्युत), शंकर आदि देवताओं द्वारा सदा वन्दना की जाती है, वही भगवती सरस्वती (जो श्रीविद्या की अधिष्ठात्री हैं) मेरी रक्षा करें, जो समस्त जड़ता को हरने वाली हैं।"

व्याख्या एवं तांत्रिक महत्त्व : यद्यपि यह श्लोक सीधे तौर पर सरस्वती को समर्पित है, किन्तु परशुराम-कल्पसूत्र में श्रीविद्या (ललिता त्रिपुरसुन्दरी) का विस्तृत वर्णन मिलता है, जो सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा के समन्वित स्वरूप की देवी हैं। परशुराम का इस देवी की उपासना में लीन होना यह सिद्ध करता है कि वे केवल एक रौद्र-स्वभाव योद्धा ही नहीं, बल्कि शान्त और सौम्य शक्ति-साधना के भी परम ज्ञाता थे। तंत्र की श्रीविद्या परम्परा में उनका नाम आद्य आचार्यों में गिना जाता है।

4. नाथ-सम्प्रदाय में परशुराम का उल्लेख

नाथ-सम्प्रदाय के ग्रन्थों में परशुराम को एक सिद्ध योगी के रूप में स्मरण किया गया है। गोरखनाथ द्वारा रचित **गोरक्ष-सिद्धान्त-संग्रह** में उल्लेख मिलता है

"आदिनाथं प्रथमं तं नमामि, मत्स्येन्द्रनाथं गुरुमव्ययं च।
गोरक्षनाथं च योगिनीपतिं, परशुरामं च महानुभावम्॥[8]"

"मैं आदिनाथ (शिव) को, प्रथम गुरु मत्स्येन्द्रनाथ को, अविनाशी गुरु गोरक्षनाथ को, योगिनियों के स्वामी को और महानुभाव परशुराम को नमस्कार करता हूँ।"

व्याख्या एवं तांत्रिक महत्त्व : इस श्लोक में परशुराम का नाम सीधे तौर पर आदि गुरु शिव, मत्स्येन्द्रनाथ और गोरखनाथ जैसे नाथ-सम्प्रदाय के प्रवर्तकों के साथ आता है। इससे स्पष्ट है कि नाथ-पन्थ में उन्हें एक 'महानुभाव' सिद्ध योगी के रूप में पूज्य माना गया है। नाथ-सम्प्रदाय हठयोग और तंत्र-साधना का एक प्रमुख केन्द्र रहा है, अतः यह सन्दर्भ उनके तांत्रिक स्वरूप को और पुष्ट करता है।

परशुराम के तांत्रिक स्वरूप का सार-निचोड़

उपरोक्त श्लोकों एवं सन्दर्भों के आधार पर हम परशुराम के तांत्रिक स्वरूप के निम्नलिखित पहलू स्थापित कर सकते हैं:

1. **आद्य तांत्रिक आचार्य :-** परशुराम-कल्पसूत्रम् के प्रमुख प्रवक्ता होने के नाते वे तंत्र-शास्त्र के प्रथम व्यवस्थितकार माने जाते हैं।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥[9]

2. **श्रीविद्या के परम उपासक :-** वे देवी ललिता त्रिपुरसुन्दरी की उपासना की महत्त्वपूर्ण परम्परा से जुड़े हुए हैं।

श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत्सिंहासनेश्वरी।
चिदग्निकुण्डसम्भूता देवकार्यसमुद्यता॥[10]

3. **रौद्र-मन्त्रों के साधक :-** नृसिंह आदि रौद्र देवताओं की साधना उनके तांत्रिक जीवन का एक प्रमुख अंग थी, जो शत्रु-नाश एवं आन्तरिक विकारों के उन्मूलन के लिए प्रयोग में लाई जाती है।

4. **नाथ-सम्प्रदाय के स्तम्भ :-** नाथ-पन्थ में उन्हें एक चिरंजीवी सिद्ध योगी और गुरु-परम्परा का अंग माना जाता है।

आदिनाथं नमस्कृत्य गुरूं च शिष्यसंयुतम्।
कथयामि हितार्थाय गोरक्षशतकं शुभम्॥[11]

5. **प्रतीकात्मक व्यक्तित्व :-** उनका सम्पूर्ण जीवन-वृत्तान्त तांत्रिक साधना के विभिन्न चरणों चित्त शुद्धि, सिद्धि-प्राप्ति, ऊर्जा-नियन्त्रण और विवेक के प्रयोग का एक जीवन्त प्रतीक है।

निष्कर्ष :-

परशुराम का व्यक्तित्व एक साधारण अवतार की सीमाओं से परे है। वे जहाँ एक ओर सामाजिक व्यवस्था के संहारक और पुनर्स्थापक हैं वहीं दूसरी ओर साधना जगत के एक ऐसे स्तम्भ हैं जिसने तंत्र-ज्ञान की ज्योति को सदियों तक प्रज्वलित रखा। प्रस्तुत श्लोक एवं ग्रन्थ-सन्दर्भ इस तथ्य के स्पष्ट प्रमाण हैं कि परशुराम तंत्र के आद्यंतरी स्वरूप हैं। उनका जीवन और उपदेश आज भी साधकों के लिए एक जीवन्त मार्गदर्शक का कार्य करते हैं, जो यह शिक्षा देता है कि शक्ति और ज्ञान, क्रोध और करुणा, संहार और सृजन के बीच का संतुलन ही वास्तविक साधना का लक्ष्य है। उनके तांत्रिक स्वरूप पर और अधिक गहन शोध, विशेषकर परशुराम-कल्पसूत्रम् एवं नृसिंह-तापनीयोपनिषद् के मूल पाठों के अध्ययन से, साधना-जगत के लिए नई दिशाओं के उद्घाटन की सम्भावना है।

सन्दर्भ :

1. महाभारत, आदिपर्व 74.46
2. महा-निर्वाण तंत्र, 2. 7
3. माहात्म्यखण्ड,12.19
4. परशुराम-तापनीय उपनिषद्, 1
5. परशुराम-कल्पपटल, 3– 5
6. पूर्वार्द्ध, मंत्र 1
7. सरस्वती वन्दना, 1
8. गोरक्ष-सिद्धान्त-संग्रह
9. देवी महात्म्य अध्याय 5, श्लोक 16
10. ललिता सहस्रनाम (प्रारम्भिक श्लोक 1– 2)
11. मंगलाचरण (प्रारम्भिक श्लोक / श्लोक 1)